अध्याय-5

सांस्कृतिक सामग्री

सांस्कृतिक सामग्री मानवीय अतीत के सामाजिक एवं आर्थिक पक्ष के पुनर्निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। सभी प्रकार की सांस्कृतिक सामग्री मानवीय समाज के दैनिक क्रियाकलापों को उजागर करने में सहायक हैं तथा यह निर्माताओं की कार्य कुशलता पर भी प्रकाश डालती है। अलग-अलग प्रकार के पुरावशेष मानवीय समाज में आए परिवर्तनों का प्रतिनिधित्व करते हैं एवं उनमें समानता को भी उजागर करते हैं। ये पुरावशेष संस्कृति के विभिन्न चरणों के उदय, विकास एवं पतन को समझने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सांस्कृतिक पुरावशेष किसी संस्कृति विशेष के स्वरूप को जानने के लिए महत्वपूर्ण स्रोत हैं। प्रागैतिहासिक एवं आद्य एतिहासिक काल के सामाजिक जीवन, जीवन निर्वाह व्यवस्था, आर्थिक व्यवस्था आदि के विषय में जानकारी प्राप्त करने के लिए पूर्णत सांस्कृतिक सामग्री पर निर्भर रहना पड़ता है। सांस्कृतिक सामग्री किसी संस्कृति विशेष में होने वाले परिवर्तनों को समझने के लिए उस स्थल के पर्यावरण, कच्ची सामग्री की उपलब्धता, तकनीकी पर भी प्रकाश डालती है। अत: सांस्कृतिक पुरावशेष प्राचीन संस्कृति के विश्वसनीय स्रोत हैं जो पुरातात्विक शोध में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वर्तमान सर्वेक्षण से मृदभांड एवं अन्य पुरावशेष प्राप्त हुए हैं। मृदभांड किसी प्राचीन संस्कृति अथवा सभ्यता के सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक तथा आर्थिक पक्षों पर प्रकाश डालते हैं। ये प्रागैतिहासिक एवं आद्य एतिहासिक काल के पुनर्निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। मृदभांडों के माध्यम से पुरातत्ववेता प्राचीन संस्कृति के विभिन्न रहस्यों को उजागर करता है। सर्वेक्षण के दौरान पुरास्थलों से बड़ी मात्रा में मृदभांड एकत्रित किए हैं जिन्होंने शोधकर्ता को विभिन्न सांस्कृतिक कालों के निर्धारण में सहायता की। साल्हावास खंड में मुख्यतः आरंभिक हड़प्पाकाल, उत्तर हड़प्पाकाल तथा पूर्व मध्यकालीन मृदभांड प्राप्त हुए हैं। सर्वेक्षण में मिले मृदभांड इस क्षेत्र के मृदभांडों की विशेषताएं एवं सांस्कृतिक क्रम को उचित परिप्रेक्ष्य में दर्शाते हैं। वर्तमान अध्ययन मुख्यतः आद्य एतिहासिक काल एवं पूर्व मध्यकाल के मृदभांडों के ऊपर आधारित है। सर्वेक्षण में मिले मृदभांडों के आधार पर प्रत्येक सांस्कृतिक काल के विभिन्न चरणों के मृदभांडों की विशेषताओं पर प्रकाश डाला गया है। सर्वेक्षण में मिले मृदभांडों के सांस्कृतिक क्रमानुसार उनके रेखाचित्र भी दर्शाए गए हैं। सर्वेक्षण के दौरान एकत्रित मृदभांडों का उत्खनित पुरास्थलों बादली और लोहट के साथ तुलनात्मक अध्ययन भी किया गया है।

5.1.1: आरंभिक हड़प्पाकालीन मृदभांड-परंपरा

आरंभिक हड़प्पाकालीन मृदभांड परंपरा को दो चरणों में विभाजित किया गया है- पूर्वी हाकड़ा मृदभांड परंपरा और सोथी-सीसवाल मृदभांड परंपरा। पूर्वी हाकड़ा मृदभांड परंपरा सरस्वती-दृषद्वती नदी की प्रथम मृदभांड परंपरा है और इसका विकसित रूप सोथी-सीसवाल मृदभांड परंपरा में देखा जा सकता है।

इस सर्वेक्षण के दौरान साल्हावास खंड से पूर्वी हाकड़ा मृदभांड परंपरा के कुछ मृदभांड मिले हैं जिनमें से चिपकवाँ अलंकरण वाले मृदभांड (Mud Appliqué Ware), रिजर्व प्रलेप वाले मृदभांड (Reserved Slipped Ware) तथा हैंडल (Handle) भी मिले हैं। ये मृदभांड ढ़ाकला-3 पुरास्थल से प्राप्त हुए हैं| संभवतः हाकड़ा मृदभांड परंपरा भी इस क्षेत्र में प्रचलित रही होगी।

झज्जर जिले में आरंभिक हड़प्पाकाल की सोथी-सीसवाल संस्कृति के सांस्कृतिक अवशेष बहादुरगढ़ खंड, झज्जर खंड और बेरी खंड से प्रतिवेदित हैं। उपर्युक्त वर्णित खंडों से कालीबंगा-1 गढ़न की ए. बी. सी. डी. और एफ. गढ़न (Fabric) के मृदभांड मिले हैं जिनमें से बड़े संग्रह पात्र, तसले, कटोरे, खुरदुरे मटके आदि प्रमुख हैं। इन मृदभांडों की बारी, गर्दन और ऊपरी भाग पर काले रंग की आड़ी-तिरछी रेखाएँ, लंबवत रेखाएं, एक-दूसरे को आपस में काटती हुई रेखाओं से युक्त चित्रण मिलते हैं| इसके अतिरिक्त अंदर की तरफ कुरेद कर बनाए गए अलंकरण (Incised Decoration) युक्त मृदभांड भी मिले हैं। मृदभांडों के मुख्य आकार-प्रकार में कटोरे, तसले, घड़े आदि हैं जिनकी बारी, गर्दन और ऊपरी हिस्से पर क्षैतिज एवं लंबवत रेखाएं, आड़ी- तिरछी रेखाएं जीव-जंतुओं के चित्रण अभिप्राय मिलते हैं।

बादली के उत्खनन से संग्रह पात्र, हत्थे, कप, कटोरे, साधार तश्तरियाँ आदि मिले हैं इन मृदभांडों की सतह पर चित्रण अभिप्राय एवं उत्कीर्ण अलंकरण भी मिलते हैं। चित्रण अभिप्रायों में मुख्यतः समानांतर रेखाएं, क्षैतिज एवं लंबवत रेखाएं, आड़ी-तिरछी रेखाएं, सादे मृदभांड पर काली चौड़ी पट्टियाँ तथा लाल रंग का प्रलेप भी मिलता है। इसके अतिरिक्त मृदभांडों की बाहरी सतह पर पकाने के बाद कुछ मृदभांडों के ऊपर हड़प्पा लिपि के चिन्ह् मिले हैं जिनमें से ज्यादातर रेखाएं हैं (ठाकरान और अमर सिंह 2008: 168)। बादली के उत्खनन से इस काल में बहुरंगी प्रकार के मृदभांड मिले हैं। सर्वेक्षण के दौरान साल्हावास खंड में सोथी-सीसवाल मृदभांड परंपरा के मृदभांड बहुत ही सीमित

मात्रा में मिले हैं। संपूर्ण खंड में एक ही पुरास्थल हैं जिसमें सोथी-सीसवाल संस्कृति के मृदभांड मिले हैं। ये मृदभांड अच्छी तरह से पके हुए, मध्यम से पतली गढ़न से युक्त हैं। कालीबंगा-1 ए से डी प्रकार की गढ़न के मृदभांड इस क्षेत्र में मिले हैं। इसके अतिरिक्त रिजर्व प्रलेप (Reserved Slip Ware) प्रकार के मृदभांड भी मिले हैं तथा समानांतर खान्चेदार (Parallel Grooved Ware) या हल्के कंघे की तरह के उकेरे गए मृदभांड भी मिले हैं। यहां से सोथी-सीसवाल के प्रमुख पात्र प्रकारों थालियाँ, संग्रह पात्र, गोलाकार घड़े आदि मिले हैं।

रेखाचित्र: 5.1

1. स्रोत: ढ़ाकला-3, व्यास: 20 से.मी., बाह्य रंग: लाल, गढ़न: मध्यम, अनुभाग: लाल रंग, मोटाई: 0.8 से.मी.

2 .स्रोत: ढ़ाकला-3, व्यास: 15 से.मी., बाह्य रंग: लाल, गढ़न: मध्यम, अनुभाग: लाल रंग, मोटाई: 0.8 से.मी.

3 .स्रोत: ढ़ाकला-3, व्यास: 4 से.मी., बाह्य रंग: लाल, गढ़न: मध्यम, अनुभाग: लाल रंग, मोटाई: 0.7 से.मी.

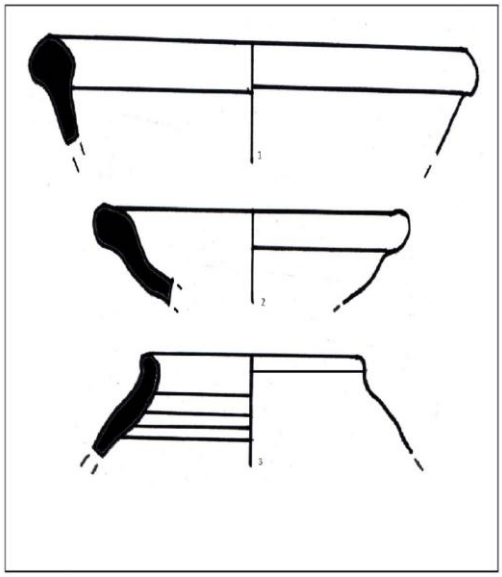

रेखाचित्र: 5.1 आरंभिक हड़प्पाकालीन मृदभांड

5.1.2: विकसित हड़प्पाकालीन मृदभांड परंपरा

विकसित हड़प्पाकालीन मृदभांड परम्परा में विशिष्ट एवं उत्कृष्ट मृदभांड दृष्टिगोचर होते हैं। इस काल में कुछ नए आकार प्रकार के मृदभांड प्रचलन में आए जो हड़प्पा सभ्यता की संपूर्ण सीमा में प्राप्त होते हैं। ये मृदभांड अच्छी तरह से गुंथी हुई मिट्टी से, उचित तापक्रम पर पके हुए तथा तेज गति के चाक पर निर्मित हैं जिन पर सामान्यतः काले रंग से चित्रण अभिप्राय संजोए गए हैं तथा इन मृदभांडो पर लाल रंग का प्रलेप भी किया गया है। इन मृदभांडो को छूने मात्र से धातु जैसे ध्वनि निकलती है। झज्जर में विकसित हड़प्पाकालीन पुरास्थल बहादुरगढ़ खंड (कटारिया 1989-90), झज्जर खंड (राहड़ 1991-92) से प्रतिवेदित हैं। बहादुरगढ़ खंड के जासौर खेड़ी-5 और लुकसार-1 पुरास्थल से छिद्रित जार के टुकड़े मिले हैं। इस खंड के दावला, मेहराना, सुरहा पुरास्थलों से छिद्रित जार, साधार-तश्तरियाँ, छिद्रित जार, बाहर की ओर झुकी बारी वाले मृदभांड (Collared Rim) आदि आकार-प्रकार के मृदभांड मिले हैं। ये मृदभांड मध्यम गढ़न के हैं तथा चाक पर निर्मित हैं। संग्रह पात्र और साधार-तश्तारियाँ काले रंग की क्षैतिज पट्टियों से चित्रित हैं। अमदल शाहपुर पुरास्थल से छिद्रित जार, तश्तरियाँ, साधार-तश्तरियाँ, बड़े संग्रह पात्र, चषक, मटके, बड़े संग्रह पात्र, मटके आदि मिले हैं। इसके अतिरिक्त पुरावशेषों में त्रिभुजाकार एवं गोलाकार मिट्टी से निर्मित केक तथा चूड़ियों के टुकड़े मिले हैं (जय नारायण 1990-91)।

बादली के उत्खनन से विकसित हड़प्पाकाल के विशिष्ट मृदभांड मिले हैं जिनमें साधार-तश्तरियाँ, छिद्रित जार और चषक आदि प्रमुख हैं (ठाकरान और अमर सिंह 2009-10: 210)। विकसित हड़प्पा काल में द्विरंगी प्रकार के मृदभांड मिले हैं। ये मृदभांड मोटे, अच्छी तरह से पके हुए और चित्रित अलंकरण से युक्त हैं। इन मृदभांडों के चित्रण में मुख्यतः प्राकृतिक एवं ज्यामितीय चित्रण मिले हैं। मृदभांडों के ऊपर लाल रंग का प्रलेप किया गया है तत्पश्चात् उन पर गहरे काले रंग का चित्रण भी किया गया है।

इस सर्वेक्षण के दौरान साल्हावास खंड में आरंभिक एवं उत्तर हड़प्पाकालीन मृदभांड-परम्परा के साक्ष्य ढ़ाकला-3 पुरास्थल से मिले हैं। इस पुरास्थल के ग्रामीण स्वरूप के कारण यहाँ से विकसित हड़प्पाकालीन मृदभांड-परम्परा के विषय में स्पष्ट रूप से कुछ कहा नहीं जा सकता क्योंकि यहाँ स्थित पुरास्थल ग्रामीण स्वरूप के हैं। अत: यह बता पाना अत्यंत कठिन है की यहाँ विकसित हड़प्पाकाल

था अथवा नहीं। विकसित हड़प्पाकाल में सोथी-सीसवाल मृदभांड परंपरा करीब 60% से 70% तक मिलती है लेकिन पुरास्थल के ग्रामीण स्वरूप होने के कारण इनकी संख्या और अधिक बढ़ जाती है। इस सर्वेक्षण के दौरान विकसित हड़प्पाकाल के विशिष्ट मृदभांड नहीं मिले हैं। ढ़ाकला-3 पुरास्थल पर आरंभिक हड़प्पाकाल और उत्तर हड़प्पाकाल के साक्ष्य मिलने के कारण संभवतः यहाँ लोग विकसित हड़प्पाकाल में भी रहे होंगे लेकिन उनका स्वरूप पूरी तरह से ग्रामीण रहा होगा।

5.1.3: उत्तर हड़प्पाकालीन मृदभांड-परंपरा

उत्तर हड़प्पा काल के सांस्कृतिक अवशेष बहादुरगढ़ खंड (कटारिया 1989-90), बेरी खंड (कादियान 1987-88), झज्जर खंड (राहड़ 1991-92), बादली क्षेत्र (अशोक कुमार 1990-91) और साल्हावास खंड (ढाका 1990-91) से प्रतिवेदित हैं। उत्तर हड़प्पाकालीन मृदभांड लाल रंग के मध्यम से मोटी गढ़न के हैं। ये मृदभांड चाक पर निर्मित हैं और उनके ऊपर लाल रंग का प्रलेप किया गया है। ये मृदभांड अच्छी तरह से गुंथी मिट्टी से निर्मित हैं और पके हुए हैं। इस काल के मृदभांड मध्यम से मोटी गढ़न के हैं। मृदभांड के मुख्य आकार-प्रकार में लटकती हुई बारी वाली साधारण तश्तरियाँ, लंबी गर्दन वाले घड़े, कोलर वाली बारी के जार, कटोरे, तसले और छोटे आकार के घड़े शामिल हैं। ये मृदभांड काले रंग की क्षैतिज की रेखाओं, लहरदार रेखाओं, लंबवत रेखाओं, बिंदुओं, वनस्पति एवं फूल पत्तियों, जीव-जंतुओं के चित्रण से युक्त हैं। कुछ मृदभांड बाहर की तरफ उत्कीर्ण अलंकरण से युक्त हैं जिनमें उकेरी हुई लहरदार रेखाएं, क्षैतिज रेखाएं, क्षैतिज रेखाओं को काटती हुई तिरछी रेखाएं लंबवत रेखाएं आदि प्रमुख हैं। कुछ मृदभांडों का निचला हिस्सा उंगलियों से खुरदरा बनाया गया है। उत्तर हड़प्पाकाल के मृद्भांडो में लाल रंग के मृद्भांडो की प्रधानता है तथा ये वजन में भी भारी हैं। कुरेद कर बनाए गए अलंकरण (Outer Incised Decoration), डोरी छाप और खांचेदार अलंकरण भी पाए जाते हैं।

सर्वेक्षण के दौरान पांच पुरास्थलों से उत्तर हड़प्पाकालीन मृदभांड मिले हैं (ढ़ाकला-1, ढ़ाकला-3, कासनी-1, मुंढ़ेरा-3, पटासनी)। इन पुरास्थलों से रुक्ष लाल रंग के मृदभांड, उत्कीर्ण अलंकरण से युक्त मृदभांड, लाल सतह पर काले रंग से चित्रण युक्त मृदभांड प्राप्त हुए हैं। ये मृदभांड मध्यम से मोटी गढ़न के हैं तथा कम पके हुए हैं। रुक्ष लाल रंग के मृदभांड बड़ी संख्या में मिले हैं जिनमें मुख्य प्रकार थालियां, संग्रह पात्र, कटोरे, तसले, घड़े आदि हैं। बाहरी उत्कीर्ण अलंकरण युक्त मृदभांड (Outer Incised Decoration) उत्तर हड़प्पाकाल की मुख्य विशेषता है। सामान्यत: ये उत्कीर्ण अलंकरण मृदभांड के ऊपरी हिस्से पर मिलते हैं। उत्कीर्ण अलंकरण से युक्त मृदभांडो पर क्षैतिज रेखाएं, लंबवत

रेखाएं, आड़ी-तिरछी रेखाएं तथा चटाई की छाप वाले अलंकरण (मुंढ़ेरा-3) प्रमुख हैं। काले रंग से चित्रित मृदभांड भी मिले हैं जिनमें रुक्ष लाल रंग का प्रलेपन और काले रंग के चित्रण भी मिलते हैं। इस काल में अलग-अलग आकार प्रकार के मृदभांड मिलते हैं जिनमें थालियां, साधार तश्तरियां, कटोरे, घड़े, संग्रह पात्र, तसले, हत्थे लगे हुए घड़े आदि मृदभांड बाहर की ओर लटकती हुई बारी (Drooping Rim), उभरी हुई बारी (Flaring Rim), समतल एवं ऊँची बारी (Flat Topped Rim), कॉलर की तरह लटकती हुई बारी (Collared Rim), वक्रनुमा बारी (Beaded Rim) वाले मृदभांड मिलते हैं।

रेखाचित्र: 5.2

1. स्रोत: पटासनी, व्यास: 12 से.मी., बाह्य रंग: रुक्ष लाल, गढ़न: मध्यम, अनुभाग: लाल रंग, मोटाई: 0.8 से.मी.

2. स्रोत: ढ़ाकला-3, व्यास: 20 से.मी., बाह्य रंग: लाल, गढ़न: मध्यम, अनुभाग: लाल रंग, मोटाई: 1.5 से.मी.

3. स्रोत: ढ़ाकला-3, व्यास: 16 से.मी., बाह्य रंग: रुक्ष लाल, गढ़न: मध्यम, अनुभाग: लाल रंग, मोटाई: 1.1 से.मी.

4. स्रोत: ढ़ाकला-3, व्यास: 17 से.मी., बाह्य रंग: लाल, गढ़न: मध्यम, अनुभाग: लाल रंग, मोटाई: 1 से.मी.

5. स्रोत: ढ़ाकला-1, व्यास: 7 से.मी., बाह्य रंग: रुक्ष लाल, गढ़न: मध्यम, अनुभाग: लाल रंग, मोटाई: 0.4 से.मी.

6. स्रोत: पटासनी, व्यास: 13 से.मी., बाह्य रंग: रुक्ष लाल, गढ़न: मध्यम, अनुभाग: लाल रंग, मोटाई: 1.0 से.मी.

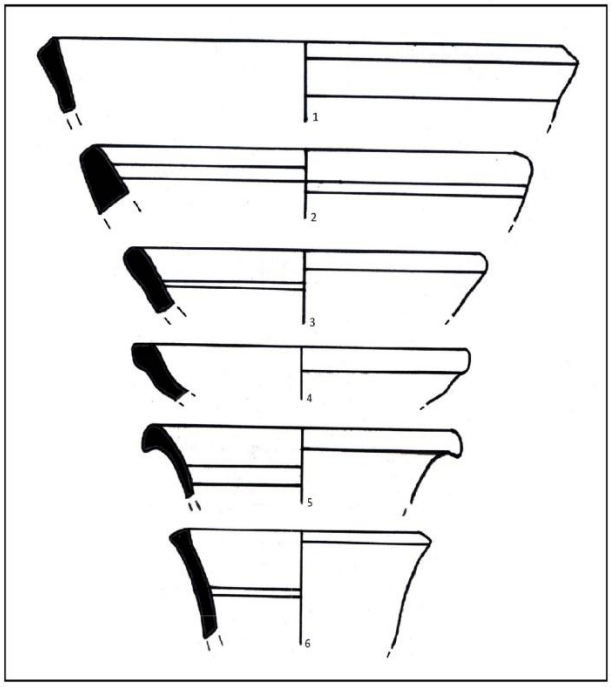

रेखाचित्र: 5.2 उत्तर हड़प्पाकालीन मृदभांड

5.1.4: पूर्व मध्यकालीन मृदभांड-परंपरा

पूर्व मध्यकाल के सांस्कृतिक अवशेष बहादुरगढ़ (कटारिया 1989-90), बेरी (कादियान 1987-88), झज्जर (राहड़ 1991-92), बादली (अशोक कुमार 1990-91), साल्हावास खंड (ढाका 1990-91) से प्रतिवेदित हैं। सर्वेक्षण के दौरान साल्हावास खंड के पूर्व मध्यकालीन मृदभांडों में अधिकतर लाल रंग के मृदभांड मिले हैं। ये मृदभांड अच्छी तरह से गुंथी हुई मिट्टी से बने हुए हैं तथा तेज गति के चाक पर निर्मित हैं। ये मृदभांड मध्यम से उत्तम गढ़न के हैं। मृदभांडों के मुख्य प्रकार घड़े, नुकीले बारी वाले कटोरे (Knife Edged bowls), टोंटीदार बर्तन, तसले, संग्रह पात्र, ढ़क्कन, घुण्डीदार ढ़क्कन आदि हैं। इस काल के मृदभांड अंदर और बाहर दोनों तरफ से काले और सफेद रंग से चित्रित हैं। मृदभांडों की बारी के पास अंदर की ओर चित्रण मिलते हैं जबकि बाहरी भाग पर बारी, गर्दन, ऊपरी हिस्से के पास चित्रण बने हुए मिले हैं। मृदभांड के आंतरिक भाग में आपस में तिरछी काटती हुई रेखाएं, पाश, लहरदार रेखाएं, तिरछी पट्टियां, क्षैतिज पट्टियां आदि चित्रण मिलते हैं जबकि बाहरी भाग के चित्रण में

समानांतर क्षैतिज के पट्टियां के मध्य लहरदार रेखाएं या मोटी काली पट्टियों के मध्य सफेद रंग के बिंदु, समानांतर क्षैतिज पट्टियां, लहरदार रेखाएं, क्षैतिज रेखाओं के मध्य त्रिभुज, आड़ी-तिरछी रेखाए, लंबवत एवं तिरछी रेखाओं की श्रृंखला से युक्त चित्रण सम्मिलित हैं। मृदभांडों की बारी के ऊपरी हिस्से पर भी चित्रण मिलते हैं जिनमें पाश, चित्रण, आड़ी तिरछी रेखाएं ,छ: रेखाओं से युक्त षट्भुज, नीचे की ओर बने पाश में तिरछी रेखाओं से युक्त चित्रण सम्मिलित हैं। इनके अतिरिक्त उत्कीर्ण अलंकरण से युक्त मृदभांड भी मिले हैं जिनकी बाहरी सतह पर लंबवत रेखाओं के साथ-साथ क्षैतिज रेखाओं का भी उत्कीर्ण अलंकरण मिलता है। साल्हावास खंड में 45 पुरास्थलों से पूर्व मध्यकालीन संस्कृति के मृदभांड मिले हैं।

रेखाचित्र: 5.3

1. स्रोत: चांदपुर, व्यास: 11 से.मी., बाह्य रंग: लाल, गढ़न: मध्यम, अनुभाग: लाल रंग, मोटाई: 0.8 से.मी.

2. स्रोत: समासपुर माजरा-3, व्यास: 10 से.मी., बाह्य रंग: लाल, गढ़न: मध्यम, अनुभाग: लाल रंग, मोटाई: 0.7 से.मी.

3. स्रोत: अम्बोली, व्यास: 10 से.मी., बाह्य रंग: लाल, गढ़न: मध्यम, अनुभाग: लाल रंग, मोटाई: 0.9 से.मी.

4. स्रोत: निलाहेड़ी , व्यास: 20 से.मी., बाह्य रंग: लाल, गढ़न: मध्यम, अनुभाग: लाल रंग, मोटाई: 0.7 से.मी.

5. स्रोत: जैतपुर, व्यास: 11 से.मी., बाह्य रंग: लाल, गढ़न: मध्यम, अनुभाग: लाल रंग, मोटाई: 0.8 से.मी.

6. स्रोत: समासपुर माजरा, व्यास: 7 से.मी., बाह्य रंग: लाल, गढ़न: मध्यम, अनुभाग: लाल रंग, मोटाई: 0.6 से.मी.

7. स्रोत: समासपुर माजरा-3, व्यास: 10 से.मी., बाह्य रंग: लाल, गढ़न: मध्यम, अनुभाग: लाल रंग, मोटाई: 0.7 से.मी.

8. स्रोत: जैतपुर, व्यास: 11 से.मी., बाह्य रंग: लाल, गढ़न: मध्यम, अनुभाग: लाल रंग, मोटाई: 0.9 से.मी.

9. स्रोत: साल्हावास-1, व्यास: 9 से.मी., बाह्य रंग: लाल, गढ़न: मध्यम, अनुभाग: लाल रंग, मोटाई: 0.6 से.मी.

10. स्रोत: चांदपुर, व्यास: 10 से.मी., बाह्य रंग: लाल, गढ़न: मध्यम, अनुभाग: लाल रंग, मोटाई: 0.9 से.मी.

11. स्रोत: धनिरवास, व्यास: 11 से.मी., बाह्य रंग: लाल, गढ़न: मध्यम, अनुभाग: लाल रंग, मोटाई: 1 से.मी.

12. स्रोत: धनिरवास , व्यास: 11 से.मी., बाह्य रंग: लाल, गढ़न: मध्यम, अनुभाग: लाल रंग, मोटाई: 0.8 से.मी.

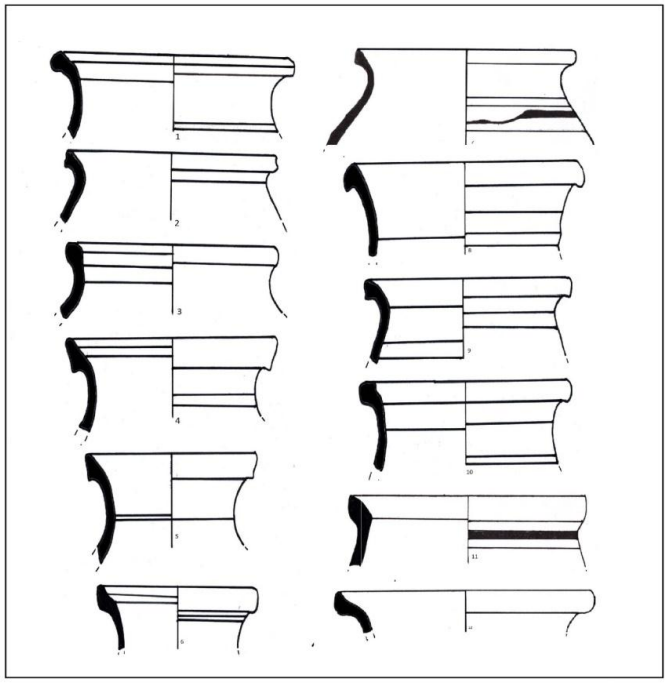

रेखाचित्र: 5.3 पूर्व मध्यकालीन मृदभांड-परंपरा

रेखाचित्र: 5.4

1. स्रोत: चांदपुर, व्यास: 11 से.मी., बाह्य रंग: लाल, गढ़न: मध्यम, अनुभाग: लाल रंग, मोटाई: 1.1 से.मी.

2. स्रोत: निलाहेड़ी, व्यास: 11 से.मी., बाह्य रंग: लाल, गढ़न: मध्यम, अनुभाग: लाल रंग, मोटाई: 0.5 से.मी.

3. स्रोत: तुम्बाहेड़ी, व्यास:9 से.मी., बाह्य रंग: लाल, गढ़न: मध्यम, अनुभाग: लाल रंग, मोटाई: 0.5 से.मी.

4. स्रोत: धनिरवास, व्यास: 8 से.मी., बाह्य रंग: लाल, गढ़न: मध्यम, अनुभाग: लाल रंग, मोटाई: 0.7 से.मी.

5. स्रोत:तुम्बाहेड़ी, व्यास: 10 से.मी., बाह्य रंग: लाल, गढ़न: मध्यम, अनुभाग: लाल रंग, मोटाई: 0.7 से.मी.

6. स्रोत:फतेहपुरी, व्यास: 7 से.मी., बाह्य रंग: लाल, गढ़न: मध्यम, अनुभाग: लाल रंग, मोटाई: 0.8 से.मी.

7. स्रोत: चांदपुर , व्यास: 11 से.मी., बाह्य रंग: लाल, गढ़न: मध्यम, अनुभाग: लाल रंग, मोटाई: 0.5 से.मी.

8. स्रोत: फतेहपुरी , व्यास: 10 से.मी., बाह्य रंग: लाल, गढ़न: मध्यम, अनुभाग: लाल रंग, मोटाई: 0.6 से.मी.

9. स्रोत: फतेहपुरी , व्यास: 10 से.मी., बाह्य रंग: लाल, गढ़न: मध्यम, अनुभाग: लाल रंग, मोटाई: 0.6 से.मी.

10. स्रोत: चांदपुर , व्यास: 11 से.मी., बाह्य रंग: लाल, गढ़न: मध्यम, अनुभाग: लाल रंग, मोटाई: 1 से.मी.

11. स्रोत: तुम्बाहेड़ी, व्यास: 9 से.मी., बाह्य रंग: लाल, गढ़न: मध्यम, अनुभाग: लाल रंग, मोटाई: 0.6 से.मी.

12. स्रोत: समासपुर माजरा-3, व्यास: 11 से.मी., बाह्य रंग: लाल, गढ़न: मध्यम, अनुभाग: लाल रंग, मोटाई: 0.5 से.मी.

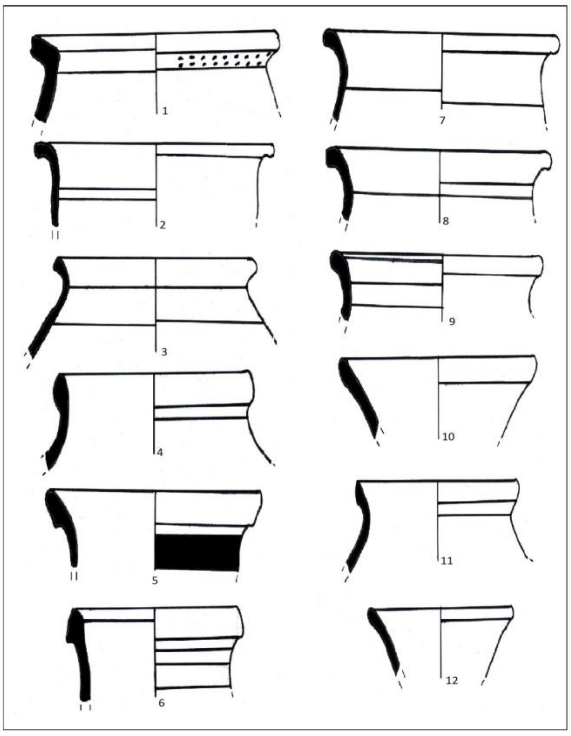

रेखाचित्र: 5.4 पूर्व मध्यकालीन मृदभांड-परंपरा

रेखाचित्र: 5.5

1. स्रोत: जैतपुर, व्यास: 9 से.मी., बाह्य रंग: लाल, गढ़न: मध्यम, अनुभाग: लाल रंग, मोटाई: 1 से.मी.

2. स्रोत: चांदपुर, व्यास: 11 से.मी., बाह्य रंग: लाल, गढ़न: मध्यम, अनुभाग: लाल रंग, मोटाई: 0.8 से.मी.

3. स्रोत: ढ़ाना, व्यास: 11 से.मी., बाह्य रंग: लाल, गढ़न: मध्यम, अनुभाग: लाल रंग, मोटाई: 0.6 से.मी.

4. स्रोत: नीलाहेड़ी, व्यास: 11 से.मी., बाह्य रंग: लाल, गढ़न: मध्यम, अनुभाग: लाल रंग, मोटाई: 1 से.मी.

5. स्रोत: जाटवाड़ा, व्यास: 12 से.मी., बाह्य रंग: लाल, गढ़न: मध्यम, अनुभाग: लाल रंग, मोटाई: 1.1 से.मी.

6. स्रोत: ढ़ाकला, व्यास: 12 से.मी., बाह्य रंग: लाल, गढ़न: मध्यम, अनुभाग: लाल रंग, मोटाई: 0.6 से.मी.

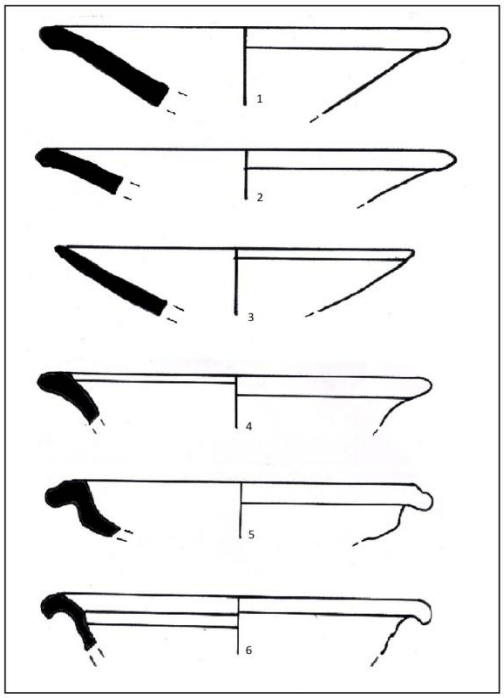

रेखाचित्र: 5.5 पूर्व मध्यकालीन मृदभांड-परंपरा

5.2: पकी मिट्टी से निर्मित वस्तुएं

पकी मिट्टी से निर्मित वस्तुओं की बाहुल्यता हड़प्पा सभ्यता में देखी जा सकती है। पकी मिट्टी की वस्तुओं में मृण्यमूर्तियां (मानव एवं पशु), मुद्रांक, मनके, चूड़ियां, गेंद, मिट्टी की खिलौना गाड़ी, पहिए, पासे, फलक, खेलने की वस्तुएं आदि सम्मिलित हैं। मानहेरू तथा मिताथल के उत्खनन से अच्छी मात्रा में पक्की मिट्टी की निर्मित वस्तुएं मिली हैं जिनमें पशु मृण्मूर्तियां, खिलौने गाड़ी, चक्र, मनके, चूड़ियां, केक, गेंद (सूरजभान 1975) आदि सम्मिलित हैं।

सर्वेक्षण के दौरान साल्हावास खंड के हड़प्पाकालीन पुरास्थलों से पक्की मिट्टी के पुरावशेषों में केवल चूड़ियां प्राप्त हुई हैं। ये पकी मिट्टी से निर्मित चूड़ियां दो पुरास्थलों ढ़ाकला-1 और ढ़ाकला-3 से

मिली हैं। हड़प्पा सभ्यता में पक्की मिट्टी की चूड़ियां व्यापक पैमाने पर प्रचलित थी। सर्वप्रथम पकी मिट्टी की चूड़ियों के साक्ष्य मेहरगढ़ के नवपाषाण कालीन स्तर से प्राप्त हुए थे। चूड़ियां हड़प्पाकाल में चौरस, गोलाकार, त्रिभुजाकार, चतुर्भुज आकार, समतल आकार में मिलती हैं। आरंभिक हड़प्पाकाल में एकल गोल अनुभाग की चूड़ियाँ बड़े पैमाने पर मिलती हैं जबकि जुड़ी हुई चूड़ियाँ (Segmented Bangles) विकसित एवं उत्तर हड़प्पाकाल में अधिक प्रचलित थी (सूरजभान1975: 76)। सर्वेक्षण के दौरान समतल या चौरस आकार वाली चूड़ियाँ मिली हैं जिन पर किसी भी प्रकार का अलंकरण नहीं है।

पूर्व मध्यकालीन संस्कृति में भी पक्की मिट्टी से निर्मित वस्तुएं व्यापक पैमाने पर प्रचलित थी। पकी मिट्टी के पुरावशेषों में चूड़ियां, मनके, खिलौना गाड़ी, मानव एवं पशुओं की मृण्मूर्तियां, पहिए, चक्र आदि सम्मिलित हैं। साल्हावास खंड से सर्वेक्षण के दौरान केवल सुपाड़ी के आकार का मिट्टी से बना हुआ मनका (Arecanut Bead) मिला है। यह मनका अच्छी तरह से पका हुआ है। इस काल में विभिन्न प्रकार के मनके भी प्रचलित थे। इसके अतिरिक्त नीलाहेड़ी नामक पुरास्थल से बैल की टूटी हुई मृण्यमूर्ति मिली है तथा अंबोली-1 पुरास्थल से अज्ञात पक्षी की टूटी हुई मृण्मूर्ति प्राप्त हुई है। चांदपुर, कुंजिया, जैतपुर, न्यौला पुरास्थलों से बच्चों के खेलने के हॉपस्कॉच भी मिले हैं।

5.3: पत्थर से निर्मित वस्तुएं

विभिन्न प्रकार के पत्थर के पुरावशेष हड़प्पा संस्कृति के पुरास्थलों से मिले हैं जैसे- स्तंभ, मूर्तिकला, मनके, बाँट, सिलबट्टे, गेंद, ब्लेड तथा अन्य काटने के उपकरण आदि मिलते हैं (अग्रवाल 2007: 148-153)। पत्थर से निर्मित पुरावशेषों में बादली के उत्खनन से पत्थर की गेंद, सिल-लोढ़े ,चर्ट ब्लेड, घनाकार के बाँट (ठाकरान और अमर सिंह 2009-10: 211) आदि मिले हैं। बहादुरगढ़ (कटारिया 1989-90), बेरी (कादियान 1987-88), झज्जर (राहड़ 1991-92), साल्हावास (1990-91) आदि खंडों से भी पत्थर के पुरावशेष प्रतिवेदित हैं। जिनमें बालुका पत्थर पर निर्मित सिल-लोढ़े, बाँट, गेंद आदि प्रमुख हैं। पत्थर के अन्य पुरावशेष इस क्षेत्र में आरंभिक हड़प्पाकाल से उत्तर हड़प्पाकाल तक मिलते हैं क्योंकि अरावली की पहाड़ियों में कच्चा माल उपलब्ध था। अधिकतर बांट, बालुका पत्थर से निर्मित हैं तथा कुछ ग्रेनाइट व क्वार्ट्जाइट (सूरजभान 1975: 59)। मिताथल (सूरजभान 1975: 59) और मानहेरू (ठाकरान 2012) से बड़े पैमाने पर भिन्न भिन्न आकार-प्रकार की पत्थर की गेंद मिली हैं। मिताथल (1975: 79) से धूसर रंग का बना हुआ वलय पत्थर तथा

क्वार्ट्जाइट पेबुल पर निर्मित दो हथोड़े भी मिले हैं। लाल बलुआ पत्थर पर निर्मित सिल-लोढ़े, मूसल इस क्षेत्र में बहुत प्रचलन में थे (परमार 2012: 128) । चूने पत्थर तथा क्वार्ट्जाइट पर निर्मित मूसल मिताथल से मिले हैं (सूरजभान 1975: 62)। सर्वेक्षण के दौरान ढ़ाकला-1 से बालुका पत्थर पर निर्मित सिलबट्टा तथा पटासनी से क्वार्ट्जाइट का लोढ़ा मिला है। इसके अतिरिक्त पतासनी पुरास्थल से बालुका पत्थर पर निर्मित बांट भी मिला है। पूर्व मध्यकालीन पुरास्थलों में साल्हावास-1, बाबेपुर, खुड्डन-3 और जैतपुर पुरास्थलों से पत्थर निर्मित बाँट तथा खुड्डन-2 और धनिरवास-2 से लोढ़े मिले हैं। समासपुर माजरा-3 पुरास्थल से पत्थर की गेंद मिली है।

5.5: फियांस की वस्तुएँ

फियांस पीसे हुए सफेद रंग के क्वार्ट्ज को गलाने तथा रंजक के मिश्रण से बनता है (केन्योर 1994: 36)। फियांस की वस्तुओं की प्राचीनता तीसरी सहस्राब्दि ईसा पूर्व तक जाती है तथा इसका प्रचलन दक्षिणी एशिया में अभी तक बना हुआ है (केन्योर 1994: 36)। हड़प्पा सभ्यता में फियांस की वस्तुएँ बड़े पैमाने पर मिलती हैं जैसे-चूड़ियाँ, मनके, सील, लघु आकार के मटके, पशु मृण्मूर्तियाँ आदि। आरंभिक हड़प्पाकाल के समय हरियाणा के क्षेत्र में फियांस की वस्तुएँ बहुत कम मात्रा में मिलती हैं। फियांस के केवल कुछ मनके एवम् चूड़ियाँ मानहेरू के आरंभिक हड़प्पाकाल के उपरी चरणों से प्राप्त हुए हैं जबकि मिताथल के इसी स्तर से फियांस की कोई वस्तु प्रतिवेदित नहीं है (परमार 2012: 123)। इन पुरास्थलों के उत्खनन से पता चला है कि फियांस की वस्तुएँ सामान्यत: विकसित हड़प्पाकाल में प्रयोग की जाती थी हालांकि उत्तर हड़प्पाकाल में इनकी अधिकता देखने को मिलती है। फियांस की वस्तुएं बादली के उत्खनन से भी मिली हैं (ठाकरान और अमर सिंह 2008: 170)। सर्वेक्षण में ढ़ाकला-3 पुरास्थल से फियांस की एक चूड़ी मिली है।